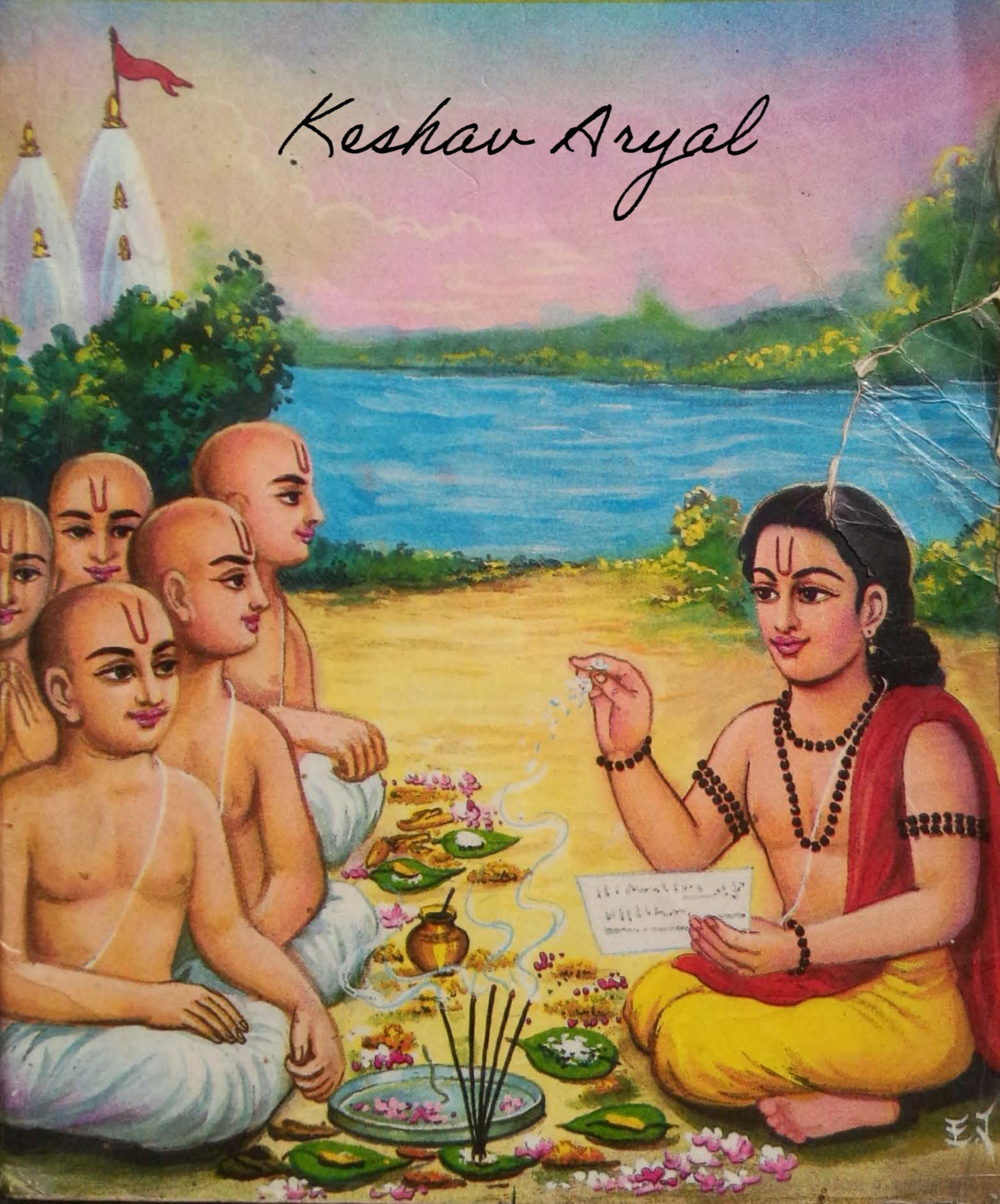
सुगम नारायण बलि श्राद्ध पद्धति



सुगम नारायण बलि पद्धति

भाषा टीका

Keshav Aryal

लेखक :

पं० सुरेश चन्द्र शास्त्री

व्याकरणाचार्य साहित्यचार्य

प्रकाशक :

शाखो प्रकाशन

पंचमोहल्ला गया-८२३००१

मूल्य : दस रुपया

सुगम
नारायणबलि-पद्धति

भाषा-टीका सहित

लेखक :-

पं० गणेशदत्त मिश्र

व्याकरणाचार्य एवं साहित्याचार्य

प्रकाशक :-

राखी प्रकाशन

पंच मौहल्ला, गया-८२३००१

दूरभाष : २४३६५८३

मूल्य-पंद्रह रुपये

नारायणबलि सामग्रीः

रोली दो रुपये की
मौली दो रुपये की
धूपबत्ती एक पैकेट
केशर एक [illegible]
कर्पूर दो रुपये का
चावल ढाई किलो
रूई दो रुपये की
चन्दन
पीली सरसों दो रु. की
पान पचास नग
सुपारी पचास नग
यज्ञोपवीत बीस
पेड़ा आधा किलो सफेद
बतासा ढाई सौ ग्राम
ऋतुफल दो दर्जन
गो दुग्ध आधा किलो
चीनी ढाई सौ ग्राम
शुद्ध घृत ढाई सौ ग्राम
शहद एक शीशी
गोबर, गोमूत्र
कच्चा सूत दो रुपये का
पुष्पमाला सफेद पच्चीस

सफेद पुष्प
तुलसी, दूर्वा, कुशा
गङ्गाजल
छोटी इलायची पाँच रु. की
लवंग पाँच रु. की
पंचपल्लव, सर्वोषधि
नारियल छः
उड़द दो सौ पचास ग्राम
काला तिल ढाई सौ ग्राम
यव सौ ग्राम
तेल सौ ग्राम
दोनिया छोटी सौ
सकोरा बड़ा पच्चीस
सकोरा छोटा पच्चीस
पुरवा दस
पत्तल दस
कुशासन पाँच
मृत्तिका
शालिग्राम की मूर्ति
कलश ताम्र का पाँच
कांसे का कटोरा एक
गिलास, थाली एक-एक

विष्णु की स्वर्णप्रतिमा एक
ब्रह्मा की चाँदी प्रतिमा एक
ताँबे की रुद्र प्रतिमा एक
यम की प्रतिमा लोहे की
शीश प्रेत के लिये एक
लाल वस्त्र एक मीटर
पीला वस्त्र एक मीटर
हरा वस्त्र एक मीटर
काला वस्त्र एक मीटर
सफेद वस्त्र एक मीटर
अंगोछा सोलह
वरण सामग्री, आठ या
चार पंडितों की

हवन सामग्री

तिल एक किलो
चावल आधा किलो
जौ ढाई सौ ग्राम
चीनी ढाई सौ ग्राम
घृत आधा किलो
लकड़ी पाँच किलो
गोयठा पचास
दियासलाई

॥ नारायणबलिसामग्री समाप्तः ॥

श्री गणेशाय नमः ।

सुगम

नारायणबलि-पद्धति

भाषा-टीका सहित

श्राद्धकर्ता (यजमान) एक दिन पहले ही संध्या काल में या उसी दिन २४ या २५ ब्राह्मण को निमन्त्रण करे । निमन्त्रण में सुपारी, अक्षत, फूल, द्रव्य लेकर पश्चिमाभिमुख बैठे हुए ब्राह्मणों को स्वयं पूर्व मुख बैठकर संकल्प पूर्वक निमन्त्रित करे ।

एकादशाह को नारायणबलि करना हो, तो 'प्रेतस्य' बोलें । स्त्री हो तो 'प्रेतायाः' बोलें ।

द्वादशाह को करना हो, (यदि वैष्णव हो) तो 'अमुकश्रीवैष्णवस्य' बोलें । स्त्री हो तो 'अमुकदेव्याः' बोलें ।

संकल्प-"ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अमुकश्रीवैष्णवस्य नारायणबलि- श्राद्धे भवन्तं देवब्राह्मणमहमामन्त्रये ।" ऐसा बोल कर ब्राह्मण के हाथ में अक्षतादि दे दे । ब्राह्मण 'तथाऽस्तु' कह दें । और ब्राह्मण, यजमान क्रोधादि-दोष से वंचित रहें । पुनः 'ब्रह्मणे नमः' कह ब्राह्मण का पूजन करें ।

कर्मपात्र-शुद्धि

पूर्वाग्र कुशों पर जलपात्र रख कर-

'ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्त्रवन्तु नः ।'

इस मन्त्र से जल दें, या जल को कुश से चला दें। कुश डाल कर चलाते समय इस मन्त्र को पढ़ें–

'ॐ पवित्रे स्थो वैष्णाब्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।'

पुनः जल दें और बोलें–

'ॐ यवोऽसि यवयाऽस्मद् द्वेषो यवया रातिः'

पुनः तुलसी पुष्प दें –

'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णान्निषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥'

पुनः चन्दन दें और बोले–

'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥'

पुनः काली तिल दें और मन्त्र बोलें–

'तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो दैवनिर्मितः ।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः प्रेतमिमं लोकं प्रीणाहि नः ॥'

पुनः हाथ में अक्षत लेकर जल पात्र में छोड़कर सभी तीर्थों का आवाहन करें ।

'ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥'

पुनः उस जल को सभी वस्तुओं पर छींटें और शिर पर भी छींटें–

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥'

इसके बाद यजमान यज्ञोपवीत धारण करे और तिलक लगवा कर पवित्री धारण करे । पवित्रेस्थो इति मन्त्रेसा ॥

रक्षादीप

गौ के घी में दीप जलाकर श्राद्ध पर्यन्त रखना चाहिए । इसे बुझना निषेध है । दीप पूर्वाभिमुख रखें ।

'ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥'

प्रधान-संकल्प

हाथ में अक्षत, पुष्प, सुपारी, द्रव्य, तिल, जल और कुश लेकर संकल्प बोलें-

'ॐ अद्य मासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्य (गोत्रायाः) अमुकश्रीवैष्णवस्य (देव्याः) अमुकदुर्मरण-दोषनिवृत्ति-पूर्वक-प्रेतत्वविमुक्ति-द्वारा भगवत्-लोकप्राप्त्यर्थं मोक्षप्राप्त्यर्थं च नारायणबलि-श्राद्धममुकशर्माऽहं करिष्ये ।'

ब्राह्मणों का वरण

ब्राह्मणों का पैर धोकर तिलक लगाकर वस्त्र-द्रव्यादि से उन्हें वरण करें ।

'नमोस्त्वनताय सहस्त्रमूर्तये०' से पैर धोवे ।

'गन्धद्वारां दुराधर्षां०' से चन्दन लगा दे । और वस्त्रादि से वरण करे ।

वैकुण्ठ तर्पण

नारायण बलि में सभी कार्य सव्य हो तथा पूर्व मुख होकर करें।

अक्षत, तिल, तुलसी, चन्दन, तीन कुश और पुष्प लेकर मृत्तिका पात्र में वैकुण्ठ तर्पण करे। नारायण के प्रत्येक नाम के साथ एक-एक अंजलि जल दिया जायेगा–

१. ॐ केशवस्तृप्यताम्।
२. ॐ नारायणस्तृप्यताम्।
३. ॐ माधवस्तृप्यताम्।
४. ॐ गोविन्दः तृप्यताम्।
५. ॐ विष्णुस्तृप्यताम्।
६. ॐ मधुसूदनस्तृप्यताम्।
७. ॐ त्रिविक्रमस्तृप्यताम्।
८. ॐ वामनस्तृप्यताम्।
९. ॐ श्रीधरस्तृप्यताम्।
१०. ॐ हृषीकेशस्तृप्यताम्।
११. ॐ पद्मनाभस्तृप्यताम्।
१२. ॐ दामोदरस्तृप्यताम्।
१३. ॐ नारायणस्तृप्यताम्।
१४. ॐ संकर्षणस्तृप्यताम्।
१५. ॐ प्रद्युम्नस्तृप्यताम्।
१६. ॐ अनिरुद्धस्तृप्यताम्।
१७. ॐ वासुदेवस्तृप्यताम्।
१८. ॐ अनन्तस्तृप्यताम्।
१९. ॐ गरुडस्तृप्यताम्।
२०. ॐ विष्वक्सेनस्तृप्यताम्।
२१. ॐ चण्डस्तृप्यताम्।
२२. ॐ प्रचण्डस्तृप्यताम्।
२३. ॐ कुमुदस्तृप्यताम्।
२४. ॐ कुमुदाक्षस्तृप्यताम्।
२५. ॐ जयस्तृप्यताम्।
२६. ॐ विजयस्तृप्यताम्।
२७. ॐ सुमुखस्तृप्यताम्।
२८. ॐ जयन्तस्तृप्यताम्।
२९. ॐ धाता तृप्यताम्।
३०. ॐ विधाता तृप्यताम्।
३१. ॐ सर्वजित् तृप्यताम्।
३२. ॐ प्रियङ्करस्तृप्यताम्।
३३. ॐ ज्ञाननिकेतनस्तृप्यताम्।
३४. ॐ सुप्रतिष्ठितस्तृप्यताम्।
३५. ॐ भद्रस्तृप्यताम्।
३६. ॐ सुभद्रस्तृप्यताम्।
३७. ॐ नन्दस्तृप्यताम्।
३८. ॐ सुनन्दस्तृप्यताम्।

भगवान् शालिग्राम की पूजा

पुरुषसूक्त द्वारा शालिग्राम का षोडशोपचार से पूजा करे। व्यापक निराकार ब्रह्म का आवाहन नहीं होता, पर व्यापक और व्याप्य साकार मूर्ति का आवाहन होता है। अतः शालिग्राम भगवान् का आवाहन करें। हाथ में तुलसी, पुष्प और सुपारी लेकर मन्त्र बोलें–

आवाहन–'सहस्त्रशीर्षा॰'। इस मन्त्र से आवाहन कर तुलसी अर्पण करें।

'सर्वमङ्गल-विग्रहाय समस्त-परिवाराय श्रीमते नारायणाय नमः, ॐ सर्वमङ्गलविग्रहं समस्त-परिवारं श्रीमन्नारायणमावाहयामि'।

आसन–'ॐ पुरुष एवेदं ꣳ सर्वं'–ॐ सर्वमङ्गल-विग्रहाय समस्तपरिवाराय श्रीमते नारायणाय नमः, इदमासनं समर्पयामि।

इससे तुलसी का आसन दें।

पाद्य–'एतावानस्य॰'–'सर्वमङ्गलविग्रहाय॰' इदं पाद्यं स॰।

तुलसी, चन्दन से मिला जल तीन बार अर्पण करे।

अर्घ्य–ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुष॰–'ॐ सर्वमङ्गल॰' से 'अर्घ्यं सम॰'।

आचमन–'ॐ ततो विराडजायत॰' 'ॐ सर्वमङ्गल॰' इदमाचमनीयं स॰।

तीन बार जल अर्पण करे।

स्नान–ॐ तस्माद्यज्ञात्॰' 'ॐ सर्वमङ्गल॰' 'इदं स्नानीय-जलं स॰ ।' या पंचामृत ।

वस्त्र–'ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि॰' 'ॐ सर्वमङ्गल॰ इदं वस्त्रं स॰' ।

इससे वस्त्र चढ़ावे ।

यज्ञोपवीत–'ॐ तस्मादश्वा॰' 'ॐ सर्वमङ्गल॰ इदं यज्ञोपवीतं स॰' से यज्ञोपवीत अर्पण करे ।

चन्दन–'ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन्॰' 'ॐ सर्वमंगल॰' इमं गन्धं स॰' । से गन्ध अर्पण करें ।

पुष्प–'ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः' 'ॐ सर्वमंगल॰ इदं पुष्पं स॰' । से पुष्प ।

धूप–'ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्॰' 'ॐ सर्वमंगल॰ इदं धूपमाघ्रापयामि ।' से धूप ।

दीप–'ॐ चन्द्रमा मनसो॰' 'ॐ सर्वमंगल इदं दीपं दर्शयामि ।' से दीप दिखावे ।

आचमन–'ॐ कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम् ।
आचम्यतां जगन्नाथ ! मया दत्तं हि भक्तितः ॥
'ॐ सर्वमंगल॰ आचमनीयं जलं स॰' ।

से तीन बार जल गिरा दे ।

पान–'ॐ यत् पुरुषेण हविषा॰' 'ॐ सर्वमङ्गल॰ ताम्बूलपत्रं समर्पयामि ।

से ताम्बूल पत्र चढ़ावे ।

सुपारी–'ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि॰' 'ॐ सर्वमंगल॰ पूगीफलं समर्पयामि ।'

से सुपारी चढ़ावे ।

आरती–'ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा॰' 'ॐ सर्वमंगल॰ इदं नीराजनं समर्पयामि ।'

ये आरती करे ।

इसके बाद भगवान् पर बारह बार तुलसी, पुष्प भगवान् के द्वादश नामों से अर्पण करे ।

ॐ केशवाय नमः ।	ॐ त्रिविक्रमाय नमः ।
ॐ नारायणाय नमः ।	ॐ वामनाय नमः ।
ॐ माधवाय नमः ।	ॐ श्रीधराय नमः ।
ॐ गोविन्दाय नमः ।	ॐ हृषीकेशाय नमः ।
ॐ विष्णवे नमः ।	ॐ पद्मनाभाय नमः ।
ॐ मधुसूदनाय नमः ।	ॐ दामोदराय नमः ।

साष्टाङ्ग प्रणाम–सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

कलश-स्थापन

भगवान् की चौकी से उत्तर चौकोर बालू की वेदी पर पाँच हल्दी के चूर्ण से स्वस्तिक बनाकर विधिपूर्वक कलश स्थापन करे ।

भूमि-स्पर्श-ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं

माहिंᳬंसीः ।

इससे धान्य राशि करण ।

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृह्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ।

Keshav Aryal

कलश-स्थापन–

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्र धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥

इससे मध्य ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य कोण में ५ कलश स्वस्ति वेदी पर रखे ।

जल दें–ॐ वरुणस्योत्तम्भमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थोवरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद ।

चन्दन दें–ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

कुश दें–पवित्री धारण का मन्त्र–

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

_दूर्वा दल दें_–ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

सर्वोषधि या हल्दी दें–

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा मनैनु वभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च ॥

सप्तमृत्तिका या अभाव में तुलसी की मिट्टी डालें–

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथा ॥

सुपारी दें– ॐ या फलिनीर्य्या ऽअफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वंहसः ॥

द्रव्य दें– हिरण्यगर्भः समबर्तताग्रे भूतस्य जातः । पतिरेक आसीत् स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

वर, पीपर, पाकड़, गूलर और आम का पल्लव दें–

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत् सनबथ पूरुषम् ॥

वस्त्र या सूत बाँधें–

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ॥

पूर्ण पात्र दें– ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जंठ् शतक्रतोः ॥

इसके बाद पाँचों कलशों को श्वेत वस्त्र से ढँक दें और उस पर निम्नलिखित क्रम-विधि से नारायण, संकर्षण, प्रद्युम्न,

अनिरुद्ध और वासुदेव को विष्णुग्रन्थि दिया हुआ कुश पर सुपारी, अक्षत, पुष्प, तिल और जलदार नारियल रखकर आवाहन करें। नारियल में वस्त्र लपेटा हुआ रहे।

पहले मध्य कलश पर–ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणाय नमः। हे नारायण ! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

ईशान कलश पर–ॐ भूर्भुवः स्वः संकर्षणाय नमः, संकर्षण ! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

कलश-पूजन

अग्निकोण कलश पर–ॐ भूर्भुवः स्वः प्रद्युम्नाय नमः, प्रद्युम्न ! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

नैऋत्यकोण पर–ॐ भूर्भुवः स्वः अनिरुद्धाय नमः, अनिरुद्ध ! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

वायुकोण के कलश पर–ॐ भूर्भुवः स्वः, वासुदेवाय नमः, वासुदेव! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

पुनः हाथ में अक्षत लेकर पाँचों कलशों पर छींट कर प्राण-प्रतिष्ठा करे।

प्राण-प्रतिष्ठा–ॐ मनोजूतिर्जुषतमाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इहमादयन्तां ओम्प्रतिष्ठ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नारायण, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, वासुदेवाः अस्मिन् कलशे सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

इसके बाद नारायणादि की पूजा करें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहितेभ्यः नारायणादि-देवेभ्यः नमः, इदं पाद्यमर्घ्यं स्नानीयं जलं वस्त्रं यज्ञोपवीतं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं दीपं नैवेद्यं नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं ताम्बूलं पूगीफलं आर्तिक्यं समर्पयामि ।

प्रार्थना–ॐ जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
नमस्तुभ्यं हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ! ॥
अनादिनिधनो देवः शंख-चक्र-गदाधरः ।
अक्षयः पुण्डरीकाक्षः (प्रेत) (अमुकशर्मा) मोक्षप्रदो भव ॥
यस्य स्मरणमात्रेण जन्म-संसार-बन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णावे प्रभविष्णावे ॥

प्रदक्षिणा– ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषां सहस्त्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

क्षमा-याचना–मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ! ।
यत् पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद ! परमेश्वर ! ॥

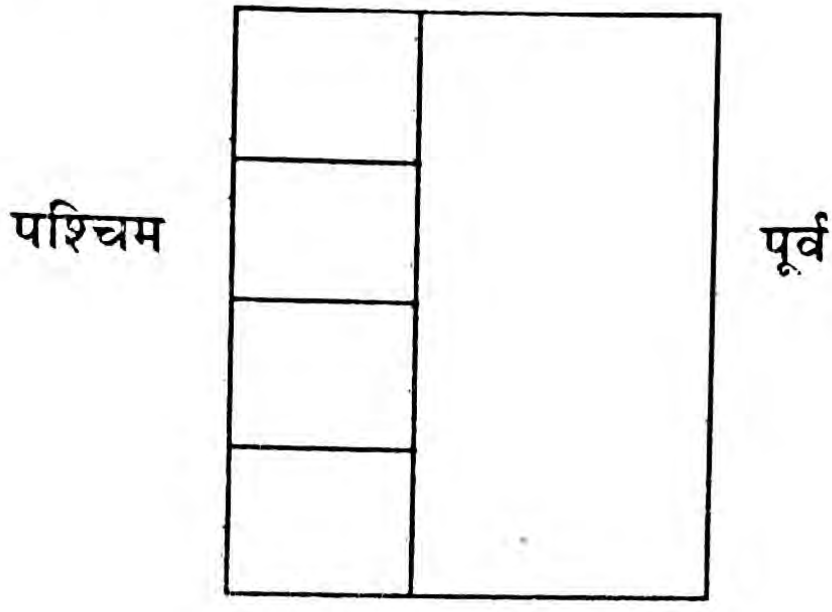
कुशकण्डिका, अग्नि स्थापन, हवन–एक हाथ लम्बी-चौड़ी ४ अंगुल ऊँची बालू की वेदी या कुण्ड पर पंच भू-संस्कार करें ।

१–तीन कुश लेकर स्थण्डिल वेदी को पश्चिम से पूर्वतक तीन बार झाड़ें और कुश को ईशान कोण में फेंक दें । इसे परिसमूहन कहते हैं ।

२–गौ के गोबर से तीन बार उसे लीपें । उसे उपलेपन कहते हैं ।

३–कुण्ड या स्थण्डिल के पश्चिम-पूर्व के आधे भाग में कुश

की जड़ से बारह अंगुल की रेखा खींचें ।



पहली से उत्तर रेखा, दूसरी से उत्तर तीसरी रेखा खींचें, इसे उल्लेखन कहते है । यह यजुर्वेदी क्रिया है ।

सामवेदी उल्लेखन इस प्रकार है : सामवेदी में पाँच रेखाएँ खींची जाती हैं । कुण्ड में पश्चिम तरफ आधा छोड़कर बारह अंगुल की रेखा खींचें । दूसरी रेखा २१ अंगुल की लम्बी दक्षिण से उत्तर तक खींचें । तीसरी रेखा पहली रेखा से उत्तर-पश्चिम से पूर्व तक १० अंगुल की लम्बी खींचें ।

चौथी रेखा तीसरी रेखा से उत्तर-पश्चिम से पूर्वतक १० अंगुल की खींचें । पाँचवीं रेखा चौथी रेखा से उत्तर-पश्चिम से पूर्व तक १० अंगुल की ही लम्बी खींचें । यजुर्वेदी और सामवेदी जिस क्रम से रेखा खींची है, उसी क्रम से दाहिना हाथ की अनामिका और अंगुष्ठा अंगुली से रेखा की मिट्टी उठाकर ईशानकोण में एक हाथ की दूरी पर फेंक दें । इसे *उद्धरण* कहते हैं । अंजली में जल लेकर स्थण्डिल पर छींटें । छींटते समय हाथ उलट दें । जैसे आग बुझाते हैं । इसे *अभ्युक्षण* कहते हैं ।

रेखाओं की पूजा–'ॐ आधाराय नमः' से पड़ी रेखा की पूजा करें । 'ॐ ईडायै नमः', 'ॐ पिङ्गलायै नमः', 'ॐ सुषुम्नायै नमः' से खड़ी रेखा की पूजा करें ।

अग्नि-स्थापन

ताम्रपात्र या मिट्टी पात्र में अग्नि लेकर अग्निकोण में रखें और ॐ हूं फट् स्वाहा' इस मन्त्र को बोल कर अग्नि का थोड़ा अंश नैऋत्यकोण में फेंक दें । पुनः गायत्री मन्त्र पढ़कर 'अग्नये नमः' से अग्नि की पूजा करें ।

पुनः अग्निकोण से ईशानकोण में अग्नि को रखकर 'ॐ नमो नारायणाय' इस मन्त्र से अग्नि पर जल छींटे ।

पीपल, पलाश या गूलर की दश-दश अंगुली की २५ लकड़ियों से 'ॐ नमो नारायणाय स्वाहा' इस मन्त्र से घी लगा कर हवन करें ।

'ॐ श्रीमन्नारायण ! अग्निं शोधय शोधय स्वाहा' ।

इस मन्त्र से कुश से अग्नि पर जल छींटें ।

हवन

'ॐ नमो नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय नमः ।'

इस मन्त्र से २५ बार घी, तिल से हवन करें । पुनः इसी मन्त्र से २५ बार हवन-श्वेत फूल और घी से करें । इसके बाद अग्नि का ध्यान करें । *लक्ष्मी उदरगत अग्नि का ध्यान*–

ॐ एषोऽहं देवप्रदिशोऽनुसर्वा पूर्वोहजातः सउगर्भे अन्तः स एव जातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः ॥

पुनः 'ॐ नमो नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम ।'

इस मन्त्र से २५ बार गौ के घृत से हवन करें ।

अग्नि का नामकरण करें–

'ॐ महालक्ष्म्याः सुतो वह्निः नारायणांशसंभव ।
तव वैष्णव नामास्ति स्वतेजः परिवर्धय ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः स्वाहा ।'

इस मन्त्र से मँड़सटका भात, घी और तिल से हवन २५ बार करें। इसके बाद व्यापक ब्रह्ममय अग्नि का ध्यान करें।

ॐ यदेतन्मण्डलं तपपि तन्महद्दुक्थन्ता ऋचः स ऋचां लोकोथ यदते दर्चिर्दीप्यते तन्महा व्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोऽथ य एष एतस्मिन् मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूंꣳष स यजुषांꣳ लोकः ॥

पुनः–ॐ नमो नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम ।'

इस मन्त्र से २५ बार घी का हवन करें। पुनः इस मन्त्र से २५ बार मधु और घी से हवन करें।

पुनः–ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्वाहा, इदं अग्नये न मम'।

इस मन्त्र से भात, घी और शक्कर से ५ बार हवन करें।

पुनः–'ॐ नमो नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम'।

इस मन्त्र से २५ बार घी का हवन करें। इसके बाद कुण्ड की योनि की ओर से अग्नि को ले जाकर कुण्ड या वेदी पर रखें और बोलें–

'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवां आसादयादिह ॥ ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्विजो यतो जातो अरोचथाः तञ्जानन्न आरोहथाग्न ॥ नो वर्द्धयारयिम् ॥

पुनः अग्नि-पात्र में अक्षत, पुष्प डाल दें।

अग्नि-आवाहन–ॐ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे

सप्त हस्तासोऽस्य । त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश । एषोऽहं देव प्रदिशोऽनु सर्वा पूर्वोंहजात स उ गर्भे अन्तः स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः । द्विशीर्षं सप्तहस्तं त्रिपादं सप्तजिह्वकं, वरदं शक्तिपाणिं च बिभ्राणं स्रुक् स्रुवौ तथा ।

रक्तमाल्याम्बरधरमेवमग्निं विचिन्तयेत् ।
आवाहयाम्यहं देवं स्रुवं समिधमुत्तमम् ॥
स्वाहाकार-स्वधाकारं वषट्कारं समन्वितम् ।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ॥
आगच्छ भगवान् देव यज्ञेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

इसके बाद 'ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः' इस मन्त्र से अग्नि की पूजा करें ।

पुनः अग्नि को प्रज्वलित कर प्रार्थना करें–

अग्नि-पूजन

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
हिरण्यवर्णमनन्त्यं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥

इसके बाद अग्नि की सात जिह्वाओं की पूजा करे–

कुण्ड के ईशान कोण में–'ॐ रक्तवर्णायै दीप्तायै नमः' ।

पूर्व में–'ॐ श्वेतवर्णायै प्रकाशायै नमः ।'

अग्निकोण में–'ॐ 'सौदामिनी वर्णायै व्याप्यै नमः ।'

नैऋत्या कोण में–'ॐ नीलवर्णायै मरीच्यै नमः ।'

पश्चिम में–'ॐ कृष्णावर्णायै तापिन्यै नमः ।'

वायुकोण में–'ॐ पीतवर्णायै करालायै नमः ।'

मध्य में–'ॐ अरुणवर्णायै लेलिहान्यै नमः ।'

इति ईश्वरसहितमग्निग्मिस्थापनम् ।

ब्रह्मा का वरण

ब्र का वरण-संकल्प–'ॐ अद्यामुकशर्मा अहम् अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः) वा प्रेतत्वविमुक्तिद्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं च नारायण-बलिश्राद्धे ब्रह्मणो वरणं करिष्ये ।

पुनः अग्निकुण्ड से उत्तर-पश्चिम मुख बैठा कर 'ॐ अस्मिन्नासने आस्यताम्' कहकर पैर धोवें ।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः ॥

अर्घ्य–दोने में ब्रह्मा के हाथ में चन्दन, तुलसी और जल दें ।

ॐ भूमिदेवाग्रजन्मासि त्वं विप्र पुरुषोत्तम ।
प्रत्यक्षो यज्ञपुरुषो ह्यर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ब्रह्मा के सिर पर जल को छींटें, शेष जल बाँयीं ओर गिरा दें ।

पुनः 'ब्रह्मणे नमः' कहकर आचमन का जल दे । ब्रह्मा उसे पी जाएँ । इसके बाद ब्रह्मा को वस्त्रादि से वरण करें–

ॐ अद्येहामुकगोस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) प्रेतत्वविमुक्ति-द्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं नारायण-बलिश्राद्धे एभिः गन्धाऽक्षतपुष्प-माला-यज्ञोपवीत-कमण्डलु-वस्त्र-द्रव्यादिभिः अमुकगोत्रममुकवेदाध्यायिनमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं यज्ञरक्षार्थं वृणे ।'

ब्रह्मा वस्त्रादि को लेकर 'वृतोऽस्मि' कह दें । पुनः यजमान के

शिर पर कुश से जल छींटता हुआ ब्रह्मा मन्त्र बोलें-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजमान प्रार्थना करें-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
ॐ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविदांवरः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥

इसके बाद कुण्ड से दक्षिण कुशासन पर ब्रह्मा को बैठा दें । ब्रह्मा से पश्चिम आचार्य उत्तर मुख बैठें । कुण्ड से पश्चिम योनि के सामने यजमान पूर्व मुख बैठें ।

परिस्तरण-कुण्ड के चारों तरफ कुश बिछाने को *परिस्तरण* कहते हैं । पहले १२ कुशों को उत्तर अग्र भाग करके कुण्ड से पूर्व दिशा में बिछा दें और कहें-

'अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्, होतारं रत्नधातमम् ।'

पुनः दक्षिण से पूर्व की ओर अग्रभाग करके १२ कुशों को फैला दें और बोलें-

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमध्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तने ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।

पश्चिम में उत्तर ओर अग्रभाग करके कुश को बिछावें-

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये निहोता सत्सि बर्हिषि ।

उत्तर में कुश का अग्रभाग पूर्व की ओर करके बिछा दें।
ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।

पूर्णपात्र–कुण्ड और ब्रह्मा के बीच में ६४ मुट्ठी, १२८ मुट्ठी या २५६ मुट्ठी चावल से भरा मिट्टी का पात्र रख दें।

पवित्र छेदन–कुण्ड से उत्तर तीन कुशों को तोड़कर उस पर जल छींट दें।

'ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ०' यह मन्त्र बोल दें।

प्रणीता-प्रोक्षणी पात्र–कुण्ड और यजमान के बीच में पूर्व-पश्चिम क्रम से प्रणीता पात्र और प्रोक्षणी पात्र रखें। प्रणीता पात्र जल से भर कर उसे तीन कुशों से ढँक दें।

प्रोक्षण–प्रणीता से जल प्रोक्षणी पात्र में भरकर पवित्र से उसे दो बार ऊपर की ओर उछालें। पुनः उस पवित्र कुश को उसी प्रोक्षणी पात्र पर रखकर; प्रणीता जल दाहिना हाथ की अनामिका और मध्यमा से प्रोक्षणी के जल पर छींटें। तथा सभी वस्तुओं पर भी कुश से जल छींटें। इसे *परिशोधन* कहते हैं।

परिरक्षण–पुनः यजमान बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में छींटें–

पूर्व में–ॐ अग्नये नमः।
अग्निकोण में–ॐ जातवेदसे नमः।
दक्षिण में–ॐ सहोजसे नमः।
नैर्ऋत्यकोण में–ॐ अजिराप्रभवे नमः।
पश्चिम में–ॐ वैश्वानराय नमः।
वायुकोण में–ॐ नयदिशे नमः।
उत्तर में–ॐ पंक्तिराधसे नमः।
ईशान में–ॐ विसर्पिणे नमः।

चारो ओर –ॐ श्रीयज्ञपुरुषाय नमः ।
अपने सिर पर–ॐ आत्मने नमः ।
सभी वैष्णव के सिर पर –ॐ सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमः ।

इसे *कुशकण्डिका* कहते हैं । इसे पूरा करके प्रायश्चित्त होम करें ।

अन्वारम्भ–ब्रह्मा दाहिने हाथ में कुश लेकर यजमान के दाहिने कंधे पर रखें; प्राजापत्य होम पर्यन्त ।

संश्रव–यजमान घी को अग्नि में हवन करके स्रुवा में लगे घी को प्रोक्षणी पात्र में पोंछकर प्रणीता पात्र में उसे डुबोकर प्रति बार हवन करें ।

आघार होम–(मन ही मन) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ।

आगे बोलकर हवन करें–ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ।

आज्यहोम–ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नेय न मम । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ।

महा व्याहृति होम–ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ।

इसके बाद यजमान के शिर पर जल छींटता हुआ यह मन्त्र बोलें–

ॐ यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत् ।
तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका ॥

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत् पापं तत् प्रतिहतमस्तु द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु ।

पंच वारुणी होम–ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणꣳ, रराणो व्रीहि मृडीकꣳ, सुहवो न एधि स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ अयाश्चाग्नेभ्यनभिशस्ति पाश्च सत्यमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा, इदमग्नये न मम ।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा, इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

ॐ उदुत्तम वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा, इदं वरुणाय न मम ।

चतुर्गृहीत होम चार ब्राह्मण वैष्णव करें–

ॐ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ ईरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूर्यवसिनी मनवे दशस्या । व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ देवश्रुतौ देवेष्वाघोषत प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती

ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम् । स्वं गोष्ठमावदतं देवि दुर्ये आयुर्मानिर्वादिष्टं प्रजां मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः स्वाहा, इदं विष्णवे न मम।

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि । यो अस्कभायदुत्तरꣳ सधस्थ विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् । उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ प्र तद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा स्वाहा । इदं विष्णवे न मम ।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोण ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

इसके बाद—ॐ सहस्त्रशीर्षा॰' आदि सोलह पुरुषसूक्त के मन्त्रों से हवन करें और मन्त्र के अन्त में 'इदं विष्णवे न मम' बोल दें ।

उत्तरानुवाक होम—ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे । तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे स्वाहा, इदं वि॰ । ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।

तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा स्वाहा । इदं विष्णवे न मम ।

ॐ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मणे स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् । यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे स्वाहा इदं विष्णवे न मम ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पक्त्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

इसके बाद नारायणानुवाक द्वारा होम करें ।

नारायणानुवाकः—

ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम् ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं प्रभुम् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥१॥

विश्वतः परमं नित्यं विश्वं नारायणं हरिम् ।
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥२॥

पतिं विश्वस्यात्मेश्वर शाश्वतं शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥३॥

नारायणः परंब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ।
नारायणः परो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय नमम ॥४॥

यच्च किञ्चिज्जगत्यस्मिन् दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥५॥

अनन्तमव्ययं कविं समुद्रेऽन्तं विश्वसंभुवम् ।
पद्मकोषप्रतीकाशं हृदयञ्चाप्यधोमुखम् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥६॥

अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ।
हृदयं तद् विजानीयाद्विश्वस्यायतनं महत् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥७॥

सन्ततं शिराभिस्तु लम्बत्या कोशसन्निभम् ।
तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥८॥

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः ।
सोऽग्रभुर्भगवान् तिष्ठन्नाहारमजरः कविः ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥९॥

सन्तापयति त्वं देहमापादतलमस्तकम् ।
तस्य मध्ये बह्निशिखा अजीयोर्ध्वा व्यवस्थिता ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥१०॥

नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा ।
नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्ययूपमम् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥११॥

तस्याः शिखायां मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।
स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥१२॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
ऊर्ध्वरेतं विरुपाक्षं विश्वरूपाय वै नमः ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥१३॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ स्वाहा
इदं नारायणाय न मम ॥१४॥

इसके बाद १०८ बार तिल और घी से–

ॐ नमो नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम ।

इस मन्त्र से हवन करे ।

इसके बाद मँड़सटका का भात, गुड़, घी (अर्थात् चरु, खीर) का हवन विष्णुसूक्त से करें ।

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं य पार्थिवानि विममे रजार्ठ् सि । यो अस्कभायदुत्तरर्ठ् सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा । स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ॥१॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ॥२॥

तदस्य प्रियमभि पाथो अस्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति । उरुक्रमस्य सहि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्तसः । स्वाहा इदं वि० ॥३॥

प्र तद् विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा । स्वाहा इदं वि० ॥४॥

परो मात्रया तनु वा वृद्यान नते महित्वमन्वश्नुवन्ति । उभे

ते विद्म रजसि पृथिव्या विष्णोर्देव त्वं परमस्य वित्से स्वाहा इदं वि० ॥५॥

विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णु मनुषे दशस्यन्, ध्रुवासोऽस्य कीरयोजनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार स्वाहा, इदं वि० ॥६॥

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतर्चसं महित्वा प्रविष्णुरस्तु तव सस्तवीर्यान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम स्वाहा, इदं वि० ॥७॥

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा, इदं वि० ॥८॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा, इदं वि० ॥९॥

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् स्वाहा, इदं वि० ॥१०॥

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा स्वाहा, इदं वि० ॥११॥

तद् विष्णोः परं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् स्वाहा, इदं वि० ॥१२॥

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् स्वाहा, इदं वि० ॥१३॥

इसके बाद चरु, गुड़ और घी से नारायण के द्वादश नामों से हवन करें–

ॐ केशवाय स्वाहा, इदं केशवाय न मम ।

ॐ नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम ।
ॐ माधवाय स्वाहा, इदं माधवाय न मम ।
ॐ गोविन्दाय स्वाहा, इदं गोविन्दाय न मम ।
ॐ विष्णवे स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।
ॐ मधुसूदनाय स्वाहा, इदं मधुसूदनाय न मम ।
ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा, इदं त्रिविक्रमाय न मम ।
ॐ वामनाय स्वाहा, इदं वामनाय न मम ।
ॐ श्रीधराय स्वाहा, इदं श्रीधराय न मम ।
ॐ हृषीकेशाय स्वाहा, इदं हृषीकेशाय न मम ।
ॐ पद्मनाभाय स्वाहा, इदं पद्मनाभाय न मम ।
ॐ दामोदराय स्वाहा, इदं दामोदराय न मम ।

इसके बाद नारायण के अवतारों के नाम से और उनके पार्षदों के नाम से हवन करें ।

ॐ नारायणाय स्वाहा, इदं नारायणाय न मम ।
ॐ सङ्कर्षणाय स्वाहा, इदं सङ्कर्षणाय न मम ।
ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा, इदं प्रद्युम्नाय न मम ।
ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा, इदं अनिरुद्धाय न मम ।
ॐ वासुदेवाय स्वाहा, इदं वासुदेवाय न मम ।
ॐ अनन्ताय स्वाहा, इदं अनन्ताय न मम ।
ॐ गरुडाय स्वाहा, इदं गरुडाय न मम ।
ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा, इदं विष्वक्सेनाय न मम ।
ॐ चण्डाय स्वाहा, इदं चण्डाय न मम ।
ॐ प्रचण्डाय स्वाहा, इदं प्रचण्डाय न मम ।
ॐ कुमुदाय स्वाहा, इदं कुमुदाय न मम ।

ॐ जयाय स्वाहा, इदं जयाय न मम ।

ॐ विजयाय स्वाहा, इदं विजयाय न मम ।

ॐ सुमुखाय स्वाहा, इदं सुमुखाय न मम ।

ॐ जयन्ताय स्वाहा, इदं जयन्ताय न मम ।

ॐ धात्रे स्वाहा, इदं धात्रे न मम ।

ॐ विधात्रे स्वाहा, इदं विधात्रे न मम ।

ॐ सर्वजिते स्वाहा, इदं सर्वजिते न मम ।

ॐ प्रियङ्कराय स्वाहा, इदं प्रियङ्कराय न मम ।

ॐ ज्ञाननिकेतनायस्वाहा, इदं ज्ञाननिकेतनाय न मम ।

ॐ सुप्रतिष्ठाय स्वाहा, इदं सुप्रतिष्ठाय न मम ।

ॐ भद्राय स्वाहा, इदं भद्राय न मम ।

ॐ सुभद्राय स्वाहा, इदं सुभद्राय न मम ।

ॐ नन्दाय स्वाहा, इदं नन्दाय न मम ।

ॐ सुनन्दाय स्वाहा, इदं सुनन्दाय न मम ।

ॐ नित्येभ्यः स्वाहा, इदं नित्येभ्यः न मम ।

ॐ मुक्तेभ्यः स्वाहा, इदं मुक्तेभ्यः न मम ।

ॐ सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्यः स्वाहा, इदं सर्वेभ्यः वैष्णवेभ्यो न मम ।

आगे *स्विष्टकृत् होम* करें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।

पुनः पूर्व कथित ढंग से अन्वारम्भ के साथ महाव्याहृति होम, पञ्चवारुणी होम और प्रजापति होम करें–

ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये न मम ।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

इसके बाद पूर्व कथित ढंग से पंचवारुणी होम करें-

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।

संश्रव प्राशन–प्रोक्षणी पात्र में लगे हुए घी को पी लें ।

पूर्ण पात्र दान–'ॐ अद्यामुकशर्माऽहं नारायणबलिश्राद्धे होमकर्मणि सद्रव्यं पूर्णपात्रममुकगोत्राय ब्राह्मणाय संप्रददे ॐ तत् सत् न मम कहकर ब्रह्मा के हाथ में दे दें और ब्रह्मा 'स्वस्ति' कहकर ले लें ।

इसके बाद प्रणीता का जल पवित्री से शिर पर सेंचन करें और बोलें-

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ।

पुनः प्रणीता का जल ईशान कोण में उलट कर बोलें-

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।

इसके बाद हाथ के पवित्री को 'ॐ स्वाहा इदं प्रजापतये न मम'। ऐसा कहकर अग्नि में डाल दें ।

इसके बाद नीचे के मन्त्र से परिस्तरण के कुशों में घी लगाकर हवन कर दें ।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञ ॐ स्वाहा । वाते धाः स्वाहा । इदं वाताय न मम।

इसके बाद पूर्णाहुति के लिए नारियल में घी लगाकर ऊपर से लाल वस्त्र लपेट कर फल, फूल, दधि, पूड़ी, पान, सुपारी, पैसा रखकर नीचे के मन्त्र से अग्नि में छोड़ दें –

ॐ प्रजापति ऋषिर्विराड्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता यशस्कामस्य यजनीयप्रयोगे विनियोगः । ॐ पूर्णहोमं यशसे जुहोमि योऽस्मै जुहोति वरमस्मै ददाति वरं वृणे यशसा भामि लोके स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम ।

इसके बाद हवनकुण्ड से पश्चिम पिंड के लिए चौरेठा से द्वादश घर बनावें ।

Keshav Aryal

द्वादश नारायणबलि श्राद्ध

श्राद्ध की वेदी को पूर्व लिखित विधि से चावल के चूर्ण द्वारा बनाकर १२ कटहल या पलाश के पत्तों पर विष्णु-ग्रन्थी वाले कोशों को पूर्वाग्र रख कर पूर्व मुख बैठ कर हाथ में अक्षत, तिल; पुष्प, सुपारी, कुश लेकर संकल्प करें :

ॐ अद्येहामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) प्रेतत्वविमुक्ति-द्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं नारायणबलिश्राद्धे केशवादिदामोदरपर्यन्तानां देवानामावाहन-पूजनपूर्वकं पिण्डदानमहं करिष्ये ।

पुनः आसन का संकल्प करें-

ॐ अद्येहामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्ति-द्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं नारायणबलिश्राद्धे केशवादि-दामोदरपर्यन्तेषु श्राद्धेषु इमानि आसनानि विभज्य युष्मभ्यं स्वाहा नमः ।

यह कह कर पत्तों पर छींटें । पुनः अलग-अलग क्रम से हाथ में पुष्पादि लेकर उन कुशों पर केशवादि देवों का आवाहन करें-

ॐ नारायणाय नमः नारायणमावाहयामि ।

ॐ माधवाय नमः माधवमावाहयामि ।

ॐ गोविन्दाय नमः गोविन्दमावाहयामि ।

ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ।

ॐ मधुसूदनाय नमः मधुसूदनमावाहयामि ।

ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रममावाहयामि ।

ॐ वामनाय नमः ।मनमावाहयामि ।

ॐ श्रीधराय नमः श्रीधरमावाहयामि ।

ॐ हृषीकेशाय नमः हृषीकेशमावाहयामि ।

ॐ पद्मनाभाय नमः पद्मनाभमावाहयामि ।

ॐ दामोदराय नमः दामोदरमावाहयामि ।

इसके बाद् सबके आगे एक-एक अर्घपात्र रखकर उसमें जल, एक-एक त्रीकुश, यव, चन्दन, पुष्प, तुलसी देते हुए मन्त्र बोलें–

जल–ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्त्रवन्तु नः ।

यव–ॐ यवोऽसि यवयाऽस्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

चन्दन–'गन्धद्वारां दुराधर्षां' से चन्दन डालकर कहें–

ॐ द्वादश-अर्घपात्राणामर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु ।

पुनः प्रथम अर्घपात्र को उठाकर उसके पवित्र को प्रथम दक्षिण के आसन पर रखकर अर्घ पात्र को बायें हाथ में रख लें और दाहिने हाथ से उसे ढँक कर बायें कन्धे पर ले जाकर मन्त्र बोलें–

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः शꣳस्योना सुहवा भवन्तु ।

कंधे पर से हटाकर दाहिने हाथ में जलादि लेकर संकल्प करें–

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) भगवत् लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः केशवाय स्वाहा ।

यह कहकर उसी पवित्र पर जल देवतीर्थ से गिरा कर अर्घ पात्र को आगे ही रख दें । पुनः दूसरा-तीसरा आदि अर्घपात्र कंधे पर ले जाकर या 'दिव्या॰' पढ़कर संकल्प करके क्रम से द्वदशों पर अर्घ देते जाएँ ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकाम: नारायणबलि श्राद्धे एष अर्घ: गोविन्दाय स्वाहा ।

संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत् लोकप्राप्ति-काम: नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः नारायणाय स्वाहा ।

बार-बार संकल्प पढ़कर अर्घ पहले की तरह गिराते जाएँ ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः माधवाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः विष्णवे स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः मधुसूदनाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः त्रिविक्रमाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः वामनाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः श्रीधराय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः हृषिकेशाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः पद्मनाभाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धे एष अर्घः दामोदराय स्वाहा ।

इसके बाद सभी आसनों पर जल, चन्दन, पुष्प, सूत, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, यज्ञोपवीत, द्रव्य चढ़ाकर संकल्प का अक्षत उस पर छींट दें ।

ॐ एतानि स्नान-वस्त्र-चन्दन-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्याचमन-ताम्बूल-पूगीफल-द्रव्यादीनि केशवादिदामोदरपर्यन्तेषु अक्षय्यमस्तु स्वाहा ।

प्रार्थना–ॐ अभीप्सं श्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णता अस्तु ।

इसके बाद भोजन के लिए पात्र या पत्ता पर भोजन का सामान परोसकर पात्र को स्पर्श करते हुए यह मन्त्र पढ़ें–

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा । विष्णो हव्यं रक्षस्व–यह बोल कर अन्न में दाहिना हाथ का अँगूठा लगा कर जल से भोजन पात्रों को घेर कर पंक्तिवार करें–ॐ अपहता असुरा रक्षꣳसि वेदिषदः ।

पुनः हाथ में अक्षत, कुश, जौ लेकर संकल्प अलग-अलग करें–

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, केशवाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, नाराणाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, माधवाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, गोविन्दाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, विष्णवे स्वाहा संपद्यतां नमम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, मधुसूदनाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, त्रिविक्रमाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, वामनाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, श्रीधराय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, हृषीकेशाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, पद्मनाभाय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

ॐ एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं, दामोदराय स्वाहा संपद्यतां न मम ।

इसके बाद पिण्ड देने के लिये बालू की वेदी बनाकर सात बंधे कुशों से उस पर रेखा खींचें और बोलें–

रेखोल्लेखन–ॐ अपहता असुरा रक्षᳬसि वेदिषदः ।

अंगार भ्रमण–

पुनः ग्यारहों वेदी पर आग की टुकड़ी लेकर घुमावें–

ॐ ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुरा सन्तः स्वधया चरन्ति पुरा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ।

पुनः वेदी पर तीन-तीन कुशों को बिछाकर बारह अवनेजन पात्रों में जल, चन्दन, पुष्प, तुलसी, यव, कुश देकर अवनेजन दें–

संकल्प–

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, केशवपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, नारायपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, माधवपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, गोविन्दपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, विष्णुपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, मधुसूदनपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, त्रिविक्रमपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, वामनपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, श्रीधरपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, हृषीकेशपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, पद्मनाभपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, दामोदरपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

प्रतिबार उपर्युक्त संकल्प बोलकर नारायणादि नामों से देवें-तीर्थ द्वारा जल गिराकर अवनेजन पात्र को वैसे ही रख दे ।

इसके बाद पाक में गोघृत, मधु, तिल, पंचमेवा डालकर विल्वफल के बराबर बाहर पिण्ड बनाकर बायाँ हाथ में लेकर दाहिना हाथ से

संकल्प प्रतिबार करें ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः केशवाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः नारायणाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः माधवाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः गोविन्दाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्ड विष्णवे स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः मधुसूदनाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः त्रिविक्रमाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः वामनाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः श्रीधराय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः हृषीकेशाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डः पद्मनाभाय स्वाहा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः वा) नारायणबलिश्राद्धे, एषः पिण्डाः दामोदराय स्वाहा ।

प्रत्यवनेजन-अवनेजन जल से ही प्रत्यवनेजन दें । या दूसरे जल से भी ।

संकल्प–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलिश्राद्धे, केशवपिण्ड प्रत्यवने निक्ष्व स्वाहा ।

शेष ग्यारह मन्त्रों से भी इसी प्रकार अलग-अलग प्रत्यवनेजन दें ।

पिण्ड पूजन–सभी पिण्डों पर जल, वस्त्र, द्रव्य, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी द्रव्य चढ़ाकर हाथ में अक्षतादि लेकर संकल्प पूर्वक सब पर छींट दें ।

संकल्प–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोक-प्राप्तिकामः केशवादि-दामोदरपर्यन्तेषु गन्धादि-उपचाराः स्वाहा।

प्रार्थना–ॐ पिण्डार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु ।

ॐ एभिः पिण्डदानैः ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणो वा) भगवत्लोकप्राप्तिरस्तु ।

अक्षय्योदकदान–सभी पिण्डों के पास एक-एक दोनी में जल, अक्षत पुष्प रखकर अलग-अलग संकल्प का अक्षत उसमें डालते जाएँ ।

ॐ केशवस्य दत्तमन्नपादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ नारायणयस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ माधवस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ गोविन्दस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ विष्णोः दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ मधुसूदनस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ त्रिविक्रमस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ वामनस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।
ॐ श्रीधरस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।
ॐ हृषीकेशस्य दत्तमन्नपानानादिकमुपतिष्ठताम् ।
ॐ पद्मनाभस्य दत्तमन्नपादिकमुपनिष्ठताम् ।
ॐ दामोदरस्य दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

जलधारा–किसी पात्र में दूध, जल, चन्दन, पुष्प लेकर–

ॐ केशवादि दामोदरपर्यन्तेषु पिण्डेषु पयोधाराः स्वाहा ।
ॐ अनादि-निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ।
अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥
अतसीपुष्पसंकाशं पीतवासममच्युतम् ।
ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥
कृष्ण कृष्ण कृपालोस्त्वमगतीनां गतिर्भव ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद ।
अनेन तर्पणेनाऽथ प्रेत मोक्षप्रदो भव ॥

नित्य-मुक्त सर्व-वैष्णव श्राद्ध

नित्य सूरी और मुक्त सूरी भगवान् के पार्षद हैं । अनन्त विष्वक् सेन गरुडादि इनके नाम हैं । अतः नित्य मुक्त और सर्व वैष्णवों के नाम से पिण्ड दिया जाता है ।

द्वादश श्राद्ध ही तरह इन सबों का भी श्राद्ध होगा । पहले विष्णु ग्रन्थी वाले कुशों पर संकल्प का अक्षत पुष्प, तुलसी

और यव, सुपारी दें ।

संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणो वा) भगवल्लोकप्राप्तिकामः नारायणबलिश्राद्धाङ्गभूत-नित्यमुक्त-सर्ववैष्णवानां श्राद्धममुकशर्माऽहं करिष्ये ।

पुनः संकल्पपूर्वक कुशों पर अक्षतादि आसन के लिए छींटें ।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिद्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं नारायणबलिश्राद्धाङ्गभूत-नित्यमुक्तसर्व-वैष्णवश्राद्धे नित्यमुक्तसर्ववैष्णवेभ्यः इमानि आसनानि विभज्य, स्वाहा नमः ।

आवाहन—ॐ नित्येभ्यः नमः, नित्यान् आवाहयामि । ॐ मुक्तेभ्यः नमः, मुक्तान् आवाहयामि । ॐ सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमः । सर्वान् वैष्णवान् आवाहयामि ।

इसके बाद अर्घपात्र में कुश, जल, यव, पुष्प, चन्दन, तुलसी, डालकर अर्घपात्र को बायाँ हाथ में लेकर बायाँ कन्धे पर रख, दाहिना हाथ से ढाँप कर—'या दिव्या आपः' बोलते हुए उसका कुश दक्षिण के प्रथम नित्यों के आसन पर रखकर संकल्पपूर्वक अर्घ्य दें ।

भोजन

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नित्यमुक्तवैष्णवाश्राद्धे एषः अर्घः नित्येभ्यः स्वाहा ।

इसी तरह 'मुक्तेभ्यः स्वाहा' कहकर दें । पुनः उसी तरह 'सर्ववैष्णवेभ्यः स्वाहा' कहकर दें । संकल्प तीनों में अलग-अलग कहें । इसके बाद संकल्पपूर्वक तीनों आसनों पर चन्दन, पुष्प, तुलसी, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, यज्ञोपवीत चढ़ा दें ।

संकल्प—ॐ एतानि गन्ध-पुष्पादीनि नित्यमुक्तसर्ववैष्णवेषु

अक्षय्यमस्तु स्वाहा ।

प्रार्थना–ॐ अभीप्सं श्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णता अस्तु ।

इसके बाद पात में या पत्तों पर भोजन परोस कर–

'ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।' 'विष्णो हव्यं रक्षस्व' ।

यह पढ़कर अँगूठा को अन्न में लगाकर यव से पंक्ति वारण करें ।

ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः ।

पढ़कर यव को पात्र के चारों तरफ छींटें ।

संकल्प–एतदन्नं सोपस्करममृतरूपं हव्यं नित्येभ्यः स्वाहा संपद्यतां न मम ।

पुनः इसी तरह–मुक्तेभ्यः स्वाहा संपद्यतां न मम । सर्ववैष्णवेभ्यः स्वाहा संपद्यतां न मम ।

संकल्प अलग-अलग प्रति बार करते जाएँ ।

इसके बाद पिण्ड के लिए बालू की तीन वेदियाँ बनाकर उसपर कुशों से रेखा खींचकर अंगार भ्रामण करें ।

बोलें–ॐ ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुरा सन्तः स्वधया चरन्ति पुरा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकान्प्रणुदात्यस्मात् ।

पुनः तीनों वेदी पर तीन-तीन-कुश बिछाकर अवनेजन पात्र में जल, पुष्प, तुलसी, यव, कुश देकर अवनेजन दें–

संकल्प–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नित्यमुक्तसर्व-वैष्णवश्राद्धेषु नित्यपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

पुनः इसी तरह संकल्पपूर्वक–मुक्तपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा । तथा सर्ववैष्णवपिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा ।

इसके बाद पिण्ड में मधु, घृत, तिल, पंचमेवा मिलाकर पिण्ड दें ।

संकल्प–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नारायणबलि-श्राद्धाङ्गभूतनित्यमुक्तसर्ववैष्णवश्राद्धे एषः पिण्डः नित्येभ्यः स्वाहा, मुक्तेभ्यः स्वाहा, सर्ववैष्णवेभ्यः स्वाहा ।

इस तरह कहकर अलग-अलग क्रम से संकल्पपूर्वक पिण्ड दें ।

प्रत्यवनेजन–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य नित्यमुक्त-सर्ववैष्णवश्राद्धेषु नित्यानां पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व स्वाहा, मुक्तानां पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व स्वाहा, सर्ववैष्णवानां पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व स्वाहा ।

पिण्डज पूजन–पिण्डों पर जल, सूत, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, द्रव्य संकल्प पूर्वक चढ़ावें–

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-लोकप्राप्तिकामः नित्यमुक्तसर्ववैष्णवेषु गन्धादि उपचाराः स्वाहा ।

प्रार्थना–ॐ पिण्डार्चनविधेः परिपूर्णता अस्तु । ॐ एभिः पिण्डदानैरमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (शर्मणः, देव्याः, प्रेतायाः वा) प्रेतत्वविमुक्ति-द्वारा भगवत्प्राप्तिरस्तु ।

पुनः विष्णु ग्रन्थि से कुशों पर जल दें–

ॐ शिवा आपः सन्तु । ब्राह्मण उत्तर दे–ॐ सन्तु शिवा आपः । पुनः फूल दें–ॐ सौमनस्यमस्तु । उत्तर-अस्तु सौमनस्यम् । यव और तिल दें–अक्षतं चारिष्टमस्तु । उत्तर–ॐ अस्तु-अरिष्टम् ।

इसके बाद तीन दोनी में अक्षत, जल, तिल कुश डालकर अक्षय्योदक दें–

ॐ अद्य नित्यानां दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ अद्य मुक्तानां दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

ॐ अद्य सर्ववैष्णवानां दत्तमन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ।

सभी पिण्डों पर अक्षय्योदक का जलादि चढ़ा दें ।

जलधारा-इसके बाद् दूध, जल, तुलसी, चन्दन मिलाकर पहले प्रथम पिण्ड पर जल धारा दें ।

ॐ तदस्य ँप्रियमयि पाथो अस्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति । उरुक्रमस्य सहबन्धुरित्या विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।

दूसरे पिण्ड पर–ॐ परो मात्रया तनुवा वृधना न ते महित्व मन्वश्नुवन्ति । उभे ते विद्ध रजसी पृथिव्या विष्णोर्देवत्व परमस्य वित्से ।

तीसरे पिण्ड पर–ॐ प्र विष्णवेश समेतु मन्म गिरिक्षत उरुगायायं वृष्णेय इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरितः पदेभिः ।

कर्पूर आरती–यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

विसर्जन

पुनः, 'ये तीर्थानि प्रचरन्ति' आदि से प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग प्रणाम करें ।

अपराधसहस्त्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात् कुरु ॥

दक्षिणा–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य अमुकशर्मणः

देव्याः वा भगवत्-प्राप्त्यर्थं कृतैतत् नारायणबलिश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थं यथाशक्तिदक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायामुकब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत् न मम । ब्राह्मण बोलें–'स्वस्ति'।

पंचकलशदान–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य भगवत्-प्राप्त्यर्थं कृतनारायणबलिश्राद्धप्रतिष्ठार्थम् इमे पञ्चकलशाः ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे । ॐ तत्सत् न मम । 'स्वस्ति' ।

विसर्जन–ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

यह पढ़कर कुशों पर अक्षत छींट दें और विष्णु ग्रन्थि खोल दें।

आचार्य को गोदान–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यामुकशर्मणः भगवत्-प्राप्त्यर्थं अनुष्ठितनारायणबलिकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं इमां सुपूजितां सवत्सां गां (तन्निष्क्रय द्रव्यं वा) अमुकगोत्रायाचार्याय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत् सत् न मम । 'स्वस्ति' ।

शय्या दान–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणः भगवत्-प्राप्त्यर्थं कृतैतत् नारायणबलिश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तुलिकोप-धानादि-अलङ्कृतां इमां शय्याम् अमुकगोत्रायाचार्याय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत् न मम । ब्राह्मण बोलें–'स्वस्ति'।

ब्राह्मणों की प्रार्थना–ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणः

प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं कृतैतन्नारायणबलिकर्मणि पूजन-तर्पण-होमश्राद्धादिषु यन्न्यूनाधिकं तद्भवतां वैष्णवब्राह्मणानां तीर्थविष्णोः प्रसादाच्च सर्वं परिपूर्णमस्तु-ब्राह्मण उत्तर दें 'अस्तु परिपूर्णम्' । *विष्णु स्मरण-*

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ-क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः ।

इसके बाद भगवान् की आरती करके पिण्डों को जल में फेंककर या गौ को खिलाकर गौ, ब्राह्मणों को भोजन करावें ।

एकादशाहे नारायणबलिविधिः

एकादशाह को जलाशय के पास जाकर मिट्टी, गोबर आदि लगाकर स्नान कर स्नानाङ्ग तपर्ण करें ।

आचमन से संकल्पकर, सव्य से पूरब मुख-

'ब्रह्मादयो देवातृप्यन्ताम्' ।

उत्तर मुख यज्ञोपवीत कण्ठी की तरह कर-

'ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम्' पश्चात् पूर्वाभिमुख यज्ञोपवीत सव्य से, ॐ मरिच्यादयः ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ततः दक्षिण मुख अपसव्य से कृष्णतिलोदकैः ॐ कव्यवाडनलादयो

दिव्यपितरस्तृप्यन्ताम् । तथा चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् ।

ततः पितृतर्पणम्-अमुकगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहास्तृप्यन्ताम् । अमुकगोत्राः मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् । द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम् ।

सव्य से सूर्याघ्र्य दें । ततः नवीन वस्त्र धारण कर गोदान तथा भगवान् की पूजा करें ।

जिसका संकल्प—ॐ विष्णुः ३ मासादि उच्चारणकर, अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य (अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः) अमुकदुर्मरणदोषपरिहारार्थं नारायणबलिं करिष्ये । तत्र नारायणबलिपूर्वाङ्गभूतं श्रीमहाविष्णोः यथोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ।

प्रायश्चित्त संकल्प

जल से बाहर निकलकर धोती, अँगोछा, तिलक लगाकर सन्ध्या-वन्दन करें । इसके बाद प्रायश्चित्त गोदान संकल्प करें ।

'अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य उर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्ट-सन्ध्याशौच-लोपाकृतस्नान-मरणाऽशौच-मरणहरिनामोच्चारणवर्जित-मरण-पञ्चगव्यप्राशनरहित-विकल्पहृदय-भाषादि-चैतन्य-म्लेच्छभाषादि- वक्ताव्यास्पर्शनादिरक्तदर्शनाऽधर्मचिन्तन- विष्णुवर्जितादत्तमरणाभावा- भावक्रियाकर्मरहित-मार्जारमूषकादि- स्पर्श-दृष्टिदोष- द्वात्रिंशद्दोषाऽपरचतुःषष्टि-दोषाऽष्टशल्या-रजश्वलासम्मार्जिनी-सूतिकादि-संसर्ग-

स्पर्श-दृष्टिदोष-परिहारार्थं मरणकाले तथा दहनकाले अविधि-कृतस्नान-आचन्द्रार्कं यावत् जन्म-मरणान्तक-विशुद्ध्यर्थं उपनयन-पापपरिहारार्थं देहशुद्ध्यर्थं महापातकोप-पातकतत्समानवर्जितानां गुरुलघुपापानाम् आतुरावस्थायामभक्ष्य-भक्ष्याऽभोज्य-भोजनाऽपेयपानादि- अगम्यागमन-क्रियालोपोन्न-परदेशपरज्ञातीयपरगृहे मरणे अर्द्धदाहे जलेन चिताशमने दक्षिणायने पञ्चकमध्ये त्रिपुष्करयमलयोगे रात्रौ कृष्णपक्षे गुरुहीने रुद्राक्षधात्री-तुलसी-सर्षपगोपीचन्दन-गङ्गोदक-स्नपनरहितेश्ववाहे तथा मार्गे शौचदेशे खर्परास्थि-चर्मामेध्य-केशादिस्पर्शे अतीर्थे परकाष्ठे पराग्निदाहे मुखे आज्याहुतिरहिते कीट-पतङ्ग-पक्षिचितामध्ये ज्वलितादिदोष-परिहारार्थं कुगतिनिवारणार्थमुत्तमलोकप्राप्त्यर्थं नारायणवल्यधि-कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशप्राजापत्यात्मक प्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यं गोमूल्यरजतादि-प्रत्याम्नाय-द्वारा यथाकाले (अथवा) अहं आचरिष्ये । होम-जपादितीर्थयात्राद्वारा वा कुर्यात् ॥

'अद्येत्यादि' ऐसा देश-काल का उच्चारण करें, बाद अमुकगोत्र वालें, अमुक प्रेत को ऊपर के छिद्रों में अशुद्धि, नीचे के छिद्रों में अशुद्धि, अथवा दोनों छिद्रों में अशुद्धि, सन्ध्या लोप, शौच का लोप, स्नान किए बिना मरना अशुद्धि में मरना, भगवान् का नाम उच्चारण नहीं करना, पञ्चगव्य नहीं लेना, विकल्प सहित हृदय वाला होना,

बोलने की इच्छा से चैतन्य होना, म्लेच्छ भाषा आदि बोलना, रजस्वला आदि का स्पर्श, रक्त दर्शन करना, अधर्म-धर्म का चिन्तन, शालग्राम की मूर्ति का घर में न होना, बिना दान किये मरना, अभाव-भाव क्रिया-कर्म रहित होना, बिलार, मूसा आदि का स्पर्श होना, दृष्टि का दोष, और भी बत्तीस दोष, इसके अतिरिक्त चौंसठ दोष आठ शल्य (हड्डी), रजस्वला, समार्जनी (कुच), सूतिका आदिकों का संसर्ग-दोष वा स्पर्श-दोष या दृष्टि-दोष इन दोषों के दूर करने के लिए और मरते समय में तथा दहन समय में बिना विधि स्नान करना, चन्द्रमा, सूर्य की स्थिति तक जो मरने के अन्त में शुद्धि हो उसके लिए उपनयन, पाप के दूर होने के लिए, शरीर शुद्धि के लिए, महापातक-उपपातक और इनकी समता से वर्जित अन्य छोटे-बड़े पातकों को दूर करने के लिए, बीमारी के समय नहीं खाने योग्य वस्तु का खाना, खाने योग्य वस्तु को न खाना, नहीं पीने वाली वस्तु को पीना, नहीं गमन करने योग्य स्त्री से गमन करना, क्रिया का लोप होना, परदेश में मरना, अन्य जाति वालों से मरना, अन्य घर में मरना, आधा दाह होना, चिता बुझ जाना, दक्षिणायन सूर्य में, पञ्चक में, त्रिपुष्कर में, यमलयोग में, रात्रि में, कृष्णपक्ष इन सब में मरना, गुरु से हीन होना, रुद्राक्ष, आँवला, तुलसी, तिल, सरसों गोपीचन्दन, गंगाजल इन सब वस्तुओं से स्नान रहित हुए मुर्दाको ले जाना तथा मार्ग में, अपवित्र स्थान में खप्पर, हड्डी चर्म, अशुद्ध वस्तु, केश आदि का स्पर्श होना, तीर्थ के बिना दाह होना, दूसरे के चितावली लकड़ी से दाह होना, मुख में घृत की आहुति को नहीं देना, चिता में कीट, पतङ्ग, पक्षियों का जलना आदि दोष दूर होने के लिए, कुगति निवारण के लिए, जिससे उत्तम लोक की प्राप्ति हो, नारायण बलि के अधिकार की सिद्धि हो, इसलिए पन्द्रह प्राजापत्य करें, प्रायश्चित के लिए एक-एक प्राजापत्य में सोना या चाँदी आदि जो मूल्य द्वारा १५ गोदान हुआ, इसको यथा काल में आचरण करूँगा। ऐसा संकल्प करें। या गायत्री

जप, होम आदि करे, अथवा तीर्थ-यात्रा द्वारा प्रायश्चित्त करें ।

दूसरा संकल्प :- ॐ तत्सदित्यादि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य शृङ्गि-दंष्ट्रि-नखि-शस्त्रघात-सर्प-जलमग्न-कण्ठग्राह- विषभक्षणाऽग्निदग्ध-विप्रमारितात्मघात-चाण्डाल-हस्त-मरण-चोरमारित-शत्रुमारित-म्लेक्षादिमारिताऽष्टाशल्या-मरण-वृक्षारोहण-वन्दिग्रहण-पाशमरण-विशूचिका भूत शाकिनीत्यादि ग्रहगृह-शकटा-दिहत-गजदन्त-पर्वता-रोहणादि विकलचित्त-भ्रम-विकृत्यात्तपाषाणहत- कुष्ठव्याधिमरण-महारोग-प्रपीडित-क्षयव्याधि-मरण- पापान्न-पोषित-मूत्रपुरीषस्याऽऽशौचमरणाऽपस्मार-रोगादि- भगन्दर-गण्डमाला-पाण्डुरोगाद्यनेकदुष्ट-मरणदोषमध्ये सम्भावित-दोषपरिहारार्थं कुगतिनिवारणार्थमुत्त्मलोकावाप्त्यर्थं नारायण-बल्यधिकारसिद्ध्यर्थ-मतिकृच्छ-चान्द्रायणद्वयम् अथवा पञ्चदश-प्राजापत्यात्मक-प्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्य धेन्वादिदानरूपं यथा-कालेऽहमाचरिष्ये। जप-होम-तीर्थभोजन-यात्रादिद्वारा वा कुर्यात् ।

अथवा दूसरा संकल्प—इस प्रकार से करे कि अमुक गोत्र, अमुक प्रेत को सींगवाले, दाँतवाले, नखवाले पशुओं से अथवा शस्त्र से, सर्प के काटने से, जल में डूबने से, फाँसी लगाकर, विष खाकर, अग्नि में जल कर, चाण्डाल के हाथ से, चोर से, म्लेच्छ आदि

से-अष्टशस्त्रादि से, वृक्ष से गिरकर, बन्दीखाने में, फाँसी से, विशूचिका से, भूत-प्रेत-शाकिनी-डाकिनी आदि ग्रहों से, मकान में दबकर, गाड़ी के नीचे दबकर, या कटकर हाथी के दाँतों से, पर्वत से गिरकर, पागल होकर, भ्रम-विकार से, पत्थर लगने से, कुष्ठ रोग से, महारोगों से पीड़ित होकर, क्षय रोग से, पापी के अन्न खाने से, पुष्ट होकर, मूत्र, विष्ठा में पड़ा रहकर और मृगीरोग आदि, भगन्दर, गण्डमाला, पाण्डुरोग आदि अनेक खराब रोगों से, इन सब दोषों में किसी में भी मृत्यु होवे तो इसको दूर करने के लिए, कुगति निवारण के लिए, उत्तमलोक प्राप्ति के लिए और नारायणबलि अधिकार के लिए, अति कृच्छ्र-चान्द्रायण व्रत अथवा पन्द्रह प्राजापत्यात्मक प्रायश्चित् के प्रति, धेनु, ब्याई गौ आदि दान रूप यथाकाल में आचरण करूँगा, जप (गायत्री), होम, तीर्थ-यात्रा, भोजन आदि द्वारा करें ।

इस प्रकार ऊर्ध्व उच्छिष्ट, अधर उच्छिष्ट, दोनों स्थान उच्छिष्ट, अस्पृश्य का स्पर्श, खटिया आदि पर मरण होने पर, पन्द्रह या बारह या छह प्राजापत्य करें ।

वहाँ पुरुषसूक्त से अपने शरीर में तथा भगवान् की प्रतिमा में न्यास करें ।

ॐ सहस्त्रशीर्षा इति वाम हस्ते । ॐ पुरुषेति दक्षिण हस्ते । ॐ एतावानस्येति वामपादे । ॐ त्रिपादूर्ध्व इति दक्षिणपादे । ॐ ततो विराड्-वामजानुनी । ॐ तस्माद्यज्ञात् दक्षिणजानुनी । ॐ तस्माद्यज्ञात् वामकट्याम् । ॐ तस्मादश्वा॰ दक्षिणकट्याम् । ॐ तं यज्ञं नाभौ । ॐ यत्पुरुषं हृदये । ॐ ब्राह्मणोऽस्य कण्ठे । ॐ चन्द्रमा मनसो॰ वामबाहौ । ॐ नाभ्या आसी॰ दक्षिणबाहौ । ॐ यत्पुरुषेण मुखे । ॐ सप्तास्यासन्॰ नेत्रयोः । ॐ यज्ञेन यज्ञ॰ मुर्ध्नि । ततः षोडशोपचार या पञ्चोपचार से पूजा करें ।

आगच्छ देव देवेश ! संसारार्ति-विनाशन ।
पूजार्थं त्वं जगन्नाथ ! कुरु मे बहुधा कृपाम् ॥

इससे आवाहन कर पूजन करें 'यज्ञेन यज्ञ' इस से पुष्पाञ्जलि दें ।

एतत्कृतं यद्विष्णुपूजनं तेन प्रेतस्य (प्रेतायाः) विमुक्तिरस्तु । श्रीविष्णुः प्रीणातु ।

इसके बाद आचार्यादिवरण ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य (अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः) दुर्मरण-दोष-निवृत्तिपूर्वक-विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं नारायणबलिकर्मणि सूक्तपाठकरणार्थं होमादिकर्म कर्तुं च अमुकगोत्रान् ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे ।

ईशान कोण में श्वेत वस्त्र पर अष्ट दल कमल पर आठों दिशाओं में क्रमशः अष्टशक्तियों का स्थापन-पूजन करें ।

१. *पूर्वे* रुक्मिण्यै नमः रुक्मिणीमावाहयामि ।

२. *आग्नेय्याम्* सत्यभामायै नमः सत्यभामावाहयामि ।

३. *दक्षिणे* जाम्बवत्यै नमः जाम्बवतीमावाहयामि ।

४. *नैर्ऋत्यां* नाग्निक्यै नमः नाग्निकीमावाहयामि ।

५. *पश्चिमे* कालिन्द्यै नमः कालिन्दीमावाहयामि ।

६. *वायव्ये* मित्रविन्दायै नमः मित्रविन्दामावाहयामि ।

७. *उत्तरे* लक्ष्मणायै नमः लक्ष्मणामावाहयामि ।

८. *ईशान्यां*-कैकेय्यै नमः कैकेयीमावाहयामि ।

उसके बीच में ताम्र कलश पर सत्येश का स्थापन, पूजन अष्ट शक्ति के साथ करें ।

पूर्वोक्त विधि से कलश स्थापन कर उस पर पञ्चगव्य आदि से

स्पर्श, प्रतिमा को स्नपनकर प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र से प्रतिष्ठाकर अष्टशक्ति के साथ पूजन करें ।

उर्व्यां क्षीर-समुद्रेऽस्मिन् व्योम्नि सत्येश संस्थित ।

अत्र त्वं सत्यया सार्द्धं सत्येश ! भव सन्निधौ ॥

अष्टौ शक्तिसहिताय सत्येशाय नमः ।

पञ्चामृत, शुद्ध जल, वस्त्र, चन्दनादि से पूजन कर इस मन्त्र से अर्घ्य दें–

यज्ञेशाऽच्युत देवेश सत्यरूप सनातन ।

अनेनाऽर्घ्यप्रदानेन सर्व-पापाद्विमोचय ॥

सत्येशाय नमस्तुभ्यं पापहा परमेश्वर ! ।

मया दत्ताऽर्घ्यदानेन प्रेतमुक्तिप्रदो भव ॥

एतत् कृतं यत्सत्येशपूजनं तेन सत्येशः प्रीणातु ।

ततः अग्निस्थापनम् ।

पूर्वोक्त विधि से पञ्चभू-संस्कार कर अग्नि स्थापन करें ।

संकल्पः– अद्य नारायणबलिहोमकर्मणि पञ्चभूसंस्कार-पूर्वकमग्निस्थापनमहं करिष्ये ।

पश्चात् अग्नि के दक्षिण में पश्चिम से पूर्व तक ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम, प्रेत इन पाँचों प्रतिमाओं एवं पञ्चकलश को, कलश-स्थापन-विधि से स्थापन कर उन कलशों पर प्रतिष्ठा विधि से क्रमशः प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कर पूजन करें सव्य और अपसव्य से ।

एतत् कृतं तद् ब्रह्मादिपञ्चदेवतानां पूजनं तेन ब्रह्मादयः प्रीणन्तु ।

न्यूनं सम्पूर्णमस्तु । ततो विष्णुं स्तुवीत ।
जितन्ते पुण्डरीकाक्ष । नमस्ते विश्वभावन ।
नमस्तुभ्यं हृषीकेश । महापुरुषपूर्वज ॥
अनादिनिधनो देव ! शंखचक्रगदाधर ।
अक्षयः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

इसके बाद ब्रह्मा का वरण करें ।

अद्य कर्तव्यनारायणबलिहोमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः वरणद्रव्या- दिभिः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे 'वृतोऽस्मि' ।

अग्नि से दक्षिण आसन पर बैठाकर 'अस्मिन् होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कहें 'भवामि' ब्रह्मा । पूर्वोक्तविधि से कुशकण्डिका कर अग्नि में हवन करें । आहुति के बाद स्रुवा से बचा हुआ घी प्रोक्षणी-पात्र में दें ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम (मन ही मन) प्रजापतिहोमः ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ।
ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ।
ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ।

अथ प्रधानहोमः

१. ॐ युञ्जते–विष्णवे स्वाहा । २. ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे–विष्णवे स्वाहा । ३. ॐ ईरावती धेनुमती-इदं विष्णवे स्वाहा । ४. ॐ देवश्रुतौ०–इदं विष्णवे स्वाहा । ५. ॐ विष्णोर्नुकं इदं विष्णवे स्वाहा । ६. दिवो वा

विष्णु-विष्णवे स्वाहा । ७. ॐ विष्णोरराटमसि-विष्णवे स्वाहा । ८. ॐ प्रतद्विष्णु स्ववते-विष्णवे स्वाहा ।

१. ॐ लोमभ्यः स्वाहा ।
२. लोमभ्यः स्वाहा ।
३. ॐ त्वचे स्वाहा ।
४. त्वचे स्वाहा ।
५. लोहिताय स्वाहा ।
६. लोहिताय स्वाहा ।
७. मेदोभ्यः स्वाहा ।
८. मेदोभ्यः स्वाहा ।
९. मांसेभ्यः स्वाहा ।
१०. मांसेभ्यः स्वाहा ।
११. स्नाख्वभ्यः स्वाहा ।
१२. स्नाख्वभ्यः स्वाहा ।
१३. स्वभ्यः स्वाहा ।
१४. स्वभ्यः स्वाहा ।
१५. मज्ज्वभ्यः स्वाहा ।
१६. मज्ज्वभ्यः स्वाहा ।

इति षोडशाज्याहुतयः ।

१. ॐ रेतसे स्वाहा । ॐ पायवे स्वाहा । ॐ आयासाय स्वाहा । ॐ प्रायासाय स्वाहा । ॐ संयासाय स्वाहा । ॐ वियासाय स्वाहा । ॐ उधासाय स्वाहा । ॐ उद्यासाय स्वाहा । ॐ शुचये स्वाहा । ॐ शोचमानाय स्वाहा । ॐ तप्यते स्वाहा । ॐ तप्यमानाय स्वाहा ।

ॐ तप्ताय स्वाहा । ॐ धर्माय स्वाहा । ॐ निष्कृत्यै स्वाहा । ॐ प्रायश्चित्त्यै स्वाहा । ॐ भोजाय स्वाहा । ॐ यमाय स्वाहा ।

ॐ अन्तकाय स्वाहा । ॐ मृत्यवे स्वाहा । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । ॐ ब्रह्महत्यायै स्वाहा । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । ॐ द्यावापृथिवीभ्यांꣳ स्वाहा । इत्यादि मन्त्रों से घी से आहुति दें।

घी, पायस से होम । विष्णु के नाम से एक सौ आठ आहुति । ॐ विष्णवे स्वाहा ।

घी से ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्य्याय न मम । ॐ त्वं नोऽअग्नये स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम । ॐ सत्वं नोऽअग्ने स्वाहा, इदमग्नी-वरुणाभ्यां न मम । ॐ अयाश्चाऽग्ने स्वाहा । इदमग्नये नम मम । ॐ ये ते शतं स्वाहा, इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

ॐ उदुत्तमं स्वाहा, इदं वरुणायादित्यायादितये न मम । ॐ प्रजा- पतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न म्म । *इति नवाहुतयः* ।

ततः इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यः दधि-माष-बलीन् समर्पयामि अनेन बलिदानेन दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ।

पूर्व कथित विधि से पूर्णाहुति आदि करें ।

दक्षिणा-संकल्पः

सव्ये विष्णु प्रतिमा शालग्राम पर पौराण-मन्त्रों से तीन-तीन बार तर्पण करें, जल-तिल-दुग्ध-यव-सर्वौषधी-तुलसीदलमिश्रोदकेन शंखेन (शंख से) ।

अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ।
अव्ययः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥१॥

ये नमस्यन्ति गोविन्दं (२) कृष्ण कृष्ण कृपालो (३) नारायण सुरश्रेष्ठ (४) अनेन तर्पणेन प्रंतमोक्षप्रदो भव ।

पश्चात् पुरुषसूक्त से । एतत्कृतं यद्विष्णुतर्पणं तेन महाविष्णुः प्रीयताम् । *अपसव्य से*—अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य

(अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः) परलोके महातृषा-निवृत्त्यर्थं इदमुदकमुपतिष्ठतु । *सव्य से*–अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य (अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः) महाक्षुधा-निवारणार्थं विष्णुतर्पणसांगतासिद्ध्यर्थं महाविष्णु- प्रीत्यर्थं यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । तेन श्रीविष्णुः प्रीयताम् ।

अथैकादशविष्णुश्राद्धप्रयोगः

रक्षा दीपस्थापन कर पूर्वोक्त श्राद्ध विधि से कर्म पात्र आदि बनाकर, 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा' से श्राद्ध वस्तु तथा अपने शरीर पर कर्म पात्र जल से मार्जन कर तिल, पवित्री धारण कर संकल्प करें।

यव-पुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः ।

संकल्पः–अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य (अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः) विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं अमुकदुर्मरणनिमित्तक-नारायणबलिकर्मांगभूतं-एकादशविष्णुश्राद्धं विष्ण्वादि-विष्णुपर्यन्तानाम् एकोद्दिष्टविधिना एकतन्त्रेणाऽहं करिष्ये । ॐ देवताभ्यः इति त्रिर्जपेत् ।

इस मन्त्र से पलाश से छीटें–

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तमः ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥
पूर्वे रक्षतु गोविन्दः दक्षिणे मधुसूदनः ।
पश्चिमे वामनो देवरुत्तरं तु गदाधरः ॥
ऊर्ध्वं तु पुण्डरीकाक्षरधस्ताद्विष्णुदेवता ॥

पुनः उत्तर मुख होकर, उत्तरोत्तर क्रम से एकादश चट रखकर आसन दान-नारायणबलि-एकादशश्राद्धे-१ प्रथमचटे ॐ विष्णवे इदमासनम्। द्वितीयचटे-ॐ शिवाय इदमासनम् । तृतीयचटे-यमाय इदमासनम् । चतुर्थचटे-सोमराजाय इदमासनम् । पंचमचटे-हव्यवाहनाय इदमासनम् । षष्ठचटे-कव्यवाहनाय इदमासनम् । सप्तमचटे । मृत्यवे इदमासनम् ।अष्टमचटे-रुद्राय इदमासनम्।नवमचटे-तत्पुरुषाय इदमासनम् । अपसव्य से दशमचटे-प्रेताय इदमासनम् । दक्षिणाग्र रखें । हस्त प्रक्षालन कर सव्य से ॐ विष्णवे इदमासनम् । एकादश आसन क्रम से दें ।

ततः अर्घ्य एकादश बनावें जिसमें पवित्री तथा 'ॐ शन्नो देवी' से जल, यवोऽसीति' से यव, प्रेतार्घ्य पात्र में 'तिलोऽसीति' से तिल, गन्ध, पुष्प देकर अर्घ्य पात्र बायाँ हाथ में लेकर पवित्री भोजन पात्र में पूर्वाग्र रखकर उसपर कर्म पात्र से कुशा से जल देकर,

'ॐ या दिव्या' से अर्घ्य पात्र को अभिमन्त्रण कर, ॐ विष्णो एष तेऽर्थाः ।' इसी तरह शिवादिभ्योऽर्घदानम् । अर्घ जल देकर अर्घ पात्र आसन के दक्षिण पार्श्व में उत्तान ही रख दें । प्रेत स्थान पर अपसव्य से उलट कर रखें । एकादश चटों पर सव्य से तथा अपसव्य से क्रम से गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-वासांसि विष्णवे अक्षय्यमस्तु । एवं शिवाय, यमाय, सोमराजाय, हव्यवाहनाय, कव्यवाहनाय, मृत्यवे, रुद्राय, तत्पुरुषाय, उपसव्येन प्रेताय । सव्येन विष्णवे । ततः उत्तानपाणि से प्रथम पात्र पकड़कर ॐ 'पृथ्वी ते पात्रं' तथा 'इदं विष्णुर्विचक्रमे' पढ़कर 'विष्णो हव्यं

रक्षस्व' अन्नादि में अंगूठा लगाकर '३ॐ अपहताऽसुरा रक्षांऽसि वेदिषदः । चारों तरफ यव छींटकर '३ॐ एतदन्न सोपस्करं अमृतरूप हव्यं विष्णवे स्वाहा सम्पद्यन्ताम् न मम । इसी तरह सव्य-अपसव्य से शिवादि को दें । ततः पिण्ड देने के लिए एकादश वेदी बनाकर सव्य तथा अपसव्य से वेदी पर पूर्वाग्र, प्रेत वेदी पर दक्षिणाग्र रेखा करें एवं वेदी पर अंगार भ्रमण '३ॐ ये रूपाणि' मन्त्र पढ़कर करें । प्रत्येक वेदी की रेखा पर तीन-तीन कुशा रखकर एकादशपात्र में जल, यव, गन्धादि देकर प्रथम पात्र से '३ॐ विष्णवे अवने निक्ष्व' जल दें । इसी तरह सव्य-अपसव्य से शिवादिकों को 'अवने निक्ष्व' कह कर दें ।

तिल, मधु, घी, पायस से एकादश पिण्ड बनाकर पिण्ड, कुशादि लेकर '३ॐ विष्णो एष ते पिण्डो न मम' इति प्रथम अवनेजन स्थान पर दें, इसी तरह शिवादि को पिण्ड देकर अपसव्य से 'प्रेतपिण्डं ते मया दीयते ।' सव्य से '३ॐ विष्णो एष ते पिण्डो मम ।' उन पिण्डों को पूर्ववत् प्रत्यवनेजन देकर पिण्डोर सूत्राच्छादन, गन्ध पुष्प, तुलसी, धूप, दीप, नैवेद्य, पिण्ड शेषान्न, ताम्बूल, दक्षिणादि क्रम से दें । ततः पिण्डार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु । अपसव्य से अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य (अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः) सद्गतिः उत्तमलोक-प्राप्तिरस्तु । सव्य से आचमन कर ३ॐ शिवा आपः सन्तु । सौमनस्यमस्तु । ३ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

ततः अक्षय्योदकदानम् । ३ॐ विष्णोः यदन्नपानादिकं तदुपतिष्ठताम् । इसी तरह शिवादि पिण्डों पर अक्षय्योदक दें ।

पश्चात् सभी पिण्डों पर एक-एक कुशा रख कर प्रत्येक पर जलधारा दें ।

संकल्प– ॐ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य (वा अमुकप्रेतायाः) परलोके महातृषानिवारणार्थम् अमुकदुर्मरण-निमित्तक-नारायणबलिविहित-एकादशश्राद्धे पिण्डोपरि एकैकमन्त्रेण द्विद्विरञ्जलि-जलदानमहं करिष्ये। तत्र मन्त्राः 'ॐ अपो देवा मतिः' इत्यादि। ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (अमुकगोत्राय: प्रेतायाः) नारायणबलिबिहितैकादश-श्राद्धान्तर्गत-प्रथमपिण्डे जलं ते नमः। 'ॐ उपयामगृहीतो॰' इति मन्त्रेण पूर्वोक्तसंकल्प से–द्वितीय-पिण्डे जलं ते नमः।

ॐ येन पावकचक्षसा॰ इति मन्त्रेण तृतीपिण्डे जलं ते नमः। ॐ ये देवा सोम-मन्त्रेण चतुर्थसोमराजपिण्डे जलं ते नमः। ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहा–मन्त्रेण पञ्चम-हव्यवाहनपिण्डे जलं ते नमः।

ॐ अग्निर्ज्योति॰–मन्त्रेण षष्ठे सोमपिण्डे जलं ते नमः।

'ॐ हिरण्यगर्भः' इति मन्त्रेण सप्तमे रुद्रपिण्डे जलधारा ते नमः। 'ॐ इषे त्वोर्जे॰' इति मन्त्रेण अष्टमे मृत्युपिण्डे जलधारा ते नमः। 'ॐ यज्जाग्रतो दूर॰' इति मन्त्रेण नवमे पुरुषपिण्डे जलधारा ते नमः। 'ॐ याः फलिनीर्या॰' इति मन्त्रेण, अपसव्य से दशमे प्रेतपिण्डे जलधारा ते नमः। सव्य से 'ॐ विश्वतः चक्षुरुत॰' इति मन्त्रेण एकादशे विष्णुपिण्डे नमः॥

उपसव्य से ॐ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतपरलोके महातृषा-निवारणार्थम् अमुक-दुर्मरणनिमित्तक-नारायणबलौ

विहित - विष्ण्वादिविष्णुपर्यन्तं एकादशपिण्डोपरि इदमुदकमुपतिष्ठतु तीन बार जलधारा दें ।

सव्य से ॐ अद्यामुकगोत्रस्य प्रेतस्य ('प्रेतायाः प्रेतत्व-विमुक्त्यर्थं' परलोके महाक्षुधानिवृत्त्यर्थं अमुकदुर्मरण-नारायण-बलौ विहित-एकादशश्राद्धकर्मणः समृद्ध्यर्थं इमानि एकादश आमान्नानि सदक्षिणकानि विष्ण्वादिविष्णुपर्यन्तानि तत्तद् तृप्त्यर्थं यथायथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

सव्याऽपसव्येन सर्वान् पिण्डानाघ्रानोत्थापयेत् । पिण्डाधार कुशा आग में दें । एकादशश्राद्धसाङ्गतासिद्ध्यर्थं इमानि हिरण्यादि-एकादशदानानि तत्तद्देवतातृप्तये यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । पुनः दीप बुझाकर हाथ-पैर धो कर 'देवताभ्यः' इति त्रिर्जपेत् 'प्रमादात् कुर्वतां कर्मेति च पठेत् ।

अथ पञ्चश्राद्धम्

आदौ पञ्चसूक्तपाठः । (शु॰ य॰ अ॰ २२, ३१, १६, ३२, ३५)

पवित्री धारण कर पूर्वोक्त विधि से कर्म पात्र बनाकर 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा॰' जल से अपने ऊपर और श्राद्ध सामग्रियों पर मार्जन कर गायत्री जप कर संकल्प करें ।

ॐ अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वविमुक्त्यर्थं उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं नारायणबलौ विहितश्राद्धपञ्चमेकोद्दिष्ट-

विधिना करिष्ये ।

अद्यामुकगोत्रस्य प्रेतस्य (प्रेतायाः) उत्तमलोकप्राप्तिकामः पञ्चश्राद्धे ब्रह्मन् इदमासनं ते नमः । इसी तरह विष्णु, रुद्र, यम को देकर अपसव्य हो इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । 'अपहताऽसुराः' इससे श्राद्ध स्थान में तिल छींट कर 'आयन्तु नः पितरः' पढ़ें । ततः सव्य से चार, अपसव्य से एक अर्घ पात्र बना लें । गन्धादि देकर प्रथम पात्र बायाँ हाथ में लेकर पवित्री भोजन पात्र पर रखकर उस पर कर्म पात्र से जल देकर 'या दिव्या०' पढ़कर संकल्प, 'अद्यामुक-गोत्रामुकप्रेत प्रेतत्वविमुक्त्यर्थं नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे ब्रह्मन् एष हस्तार्घस्ते नमः । उत्तान ही धरें । इसी तरह और तीनों देवों को देकर अपसव्य से 'एषः हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपष्ठिताम् । अर्घ पात्र उलट दें । ततः पाँचों स्थान पर सव्यापसव्य से गन्धादि देकर संकल्प करें । ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-यम-एतानि गन्धादि वासांसि ते नमः । अपसव्य से नारायणबलौ विहित-पञ्चश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम् ।

ततः सव्यापसव्य से सभी स्थानों पर जल से चतुरस्त्रमण्डल इससे करें 'यथा चक्रायुधो विष्णुः' ।

ततः इदमन्नमेतद् भूस्वामिने नमः ।

पश्चात् सव्य से देव-पात्र में अपसव्य से भोजन-पात्र में अन्न, जल, घी, मधु देकर 'मधुव्वाता०' का पाठकर अन्न पात्र में हाथ लगाकर 'पृथिवी ते पात्रं, इदं विष्णुर्विचक्रमे०' पढ़कर अन्नादि में अंगुष्ठ

निवेशन करें—इदमन्नं, इमा आपः, इदमाज्यम्, इदं हविः ॐ यवोऽसि' से अन्न पर यव छींट कर संकल्प करें- अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (प्रेतायाः) उत्तमलोकप्राप्तिकामः पञ्चश्राद्धे ब्रह्मन् इदमन्नं सोपकरणं। और तीनों देवों को संकल्प कर अपसव्य से इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठता।

ततः सव्य से गायत्रीं, 'मधुव्वाता०' 'कृणुष्व पाजः', पुरुष सूक्त आदि पढ़ें।

अपसव्य से 'अनग्निदग्धाश्च' से विकरान्न देकर सव्य होकर भगवान् का स्मरण कर पवित्री धारण कर श्राद्ध के लिए वेदी बनाकर कुश से वेदी पर रेखा कर 'ॐ ये रूपाणि०' से अंगार भ्रमण कर वेदियों पर त्रिकुश आसन रखकर सभी स्थानों पर गन्धयुक्त जल से 'नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे ब्रह्मन् पिण्डस्थाने अवने निक्ष्व ते नमः। इसी तरह त्रिदेवों को अवनेजन देकर अपसव्य से प्रेतपिण्ड स्थाने अवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

ततः मधु, घृत, तिल युत पायस से पिण्ड बनाकर 'नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे ब्रह्मन् एष ते पिण्डो नम मम' इसी तरह त्रिदेवों को पिण्ड देकर अपसव्य से नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

कुश से हाथ पोंछकर सव्य होकर आचमन कर 'अत्र पितरो मादयध्वम्' इससे भास्वर मूर्ति का ध्यान कर 'अमीमदन्त पिता०' पढ़ें।

ततः सव्य से नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे ब्रह्मन्

विष्णुरुद्र-यमादीनां पिण्डोपरि अवने निग्ध्वम् । अपसव्य से, नारायणबलौ पञ्चश्राद्धे प्रत्यवने निक्ष्व से मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । गन्ध, पुष्पादि, शेष पिण्डान्न पिण्ड पर चढ़ाकर नारायणबलौ पञ्चश्राद्धे ब्रह्मादीनां पिण्डोपरि दत्तैतदन्नपानादिकंमुपतिष्ठताम् । अपसव्य से, प्रेतपिण्डोपरि दत्तैतद् अन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् । 'अघोरः पिताऽस्तु' पिण्डपर जल देने के बाद प्रार्थना करें। पूर्व मुख होकर 'ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां' इत्यादि पढ़ें । पश्चात् पिण्डों पर कुशा रखकर दुग्ध धारा वा जल धारा दें, इस मन्त्र से–'ॐ उर्ज्जं वहन्तीरमृतं०' से प्रत्येक पिण्ड पर सव्यापसव्य से जलधारां द्द्यात् । ततः । सव्यापसव्य से, नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे, महातृषा-निवृत्त्यर्थं द्वाभ्यां मन्त्राभ्यां एकैकाञ्जलिजलदानं करिष्ये ।

सव्य से, अग्निमीले पुरोहितम् । ब्रह्म यज्ञान प्रथमम् । ब्रह्मपिण्डोपरि । इषे त्वोर्जे । इदं विष्णुर्विचक्रमे, विष्णुपिण्डोपरि । ॐ अग्नऽआयाहि । ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव० रुद्रपिण्डोपरि ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय । ॐ यमाय त्वा, यमपिण्डोपरि । ॐ अपेतो यन्तु पणयो । ॐ प्रेता जयतानर प्रेतपिण्डोपरि ।

अपसव्य से, ततः तिल-गन्धादि युक्त जल शंख से, नारायणबलौ विहितपञ्चश्राद्धे उत्तमलोकप्राप्तिकामः इदमुदकं उपतिष्ठतु । पिण्ड सूँघ कर पिण्ड उठाकर पिण्डाधार कुशा आग में दें । अर्घ पात्रों को उठाकर, दक्षिणा संकल्प–ॐ अद्यामुकगोत्रस्य

(गोत्रायाः) पञ्चश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं दातुमहमुत्सृजे। यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय॰। ततः *कलश संकल्पः*— ॐ अद्यामुकप्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक उत्तमलोकप्राप्तिकामः ब्रह्मविष्णु-रुद्र-यमानां प्रीत्यर्थं, तत्तत् सूक्तजापिने ब्राह्मणाय तत्तत्कलशं सद्रव्यं प्रतिमासहितं दातुमहमुत्सृजे। सुवर्णादिदानं च करिष्ये। यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् च भोजयिष्ये। भूयसीं दक्षिणाञ्च दातुमहमुत्सृजे।

रक्षा दीप बुझाकर हाथ-पाँव धोकर भगवान की आरती कर और नीचे लिखे मन्त्र से हाथ जोड़कर प्रणाम करें—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

॥ इति सुगम-नारायणबलिः समाप्ता ॥

●

Keshav Aryal

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—
श्री कृष्ण पुस्तक भण्डार
विष्णुपद मार्ग, गया-८२३ ००१